सिया उदिण्णा वेयणा ॥ ३१ ॥

संपहि एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव–पयडि–समयाणमेगवयणं जीव सम–याणं बहुवयणं च ठविय

१	१	१
२	०	२

एत्थ अक्खपरावत्ते कदे उदिण्णवेयणाए जीव–पयडि–समयाणं पत्थारो उप्पज्जदि

१	१	२	२
१	१	१	१
१	२	१	२

। एत्थ उदिण्णाए णत्थि पयडिबहुवयणं, एक्किस्से णाणावरणीयपयडीए बहुत्ताभावादो । जीवबहुवयणमत्थि । ण तत्तो उदिण्णबहुत्तं, समयबहुत्तादो चेव उदिण्णाए बहुत्तववहारुवलंभादो । ण च लोगववहारबाहिरं किं पि अत्थि, अव्ववहारणिज्जस्स अत्थित्तविरोहादो । संपहि एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा– एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा । एवमुदिण्णएगवयणसुत्तस्स बे भंगा (२)।

सिया उवसंता वेयणा ॥ ३२ ॥

....

कथंचित् उदीर्ण वेदना है ॥ ३१ ॥

अब इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति और समय, इनके एकवचन तथा जीव व समयके बहुवचनको

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	अनेक

भी स्थापित करके यहाँ अक्षपरावर्तन करनेपर उदीर्ण वेदना सम्बन्धी जीव, प्रकृति व समयका प्रस्तार उत्पन्न होता है–

जीव	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	अनेक	एक	अनेक

यहाँ उदीर्ण वेदनामें प्रकृतिका बहुवचन सम्भव नहीं है, क्योंकि, एक ज्ञानावरणीय प्रकृतिका बहुत होना असम्भव है । जीवबहुवचन सम्भव है । परन्तु उससे उदीर्ण प्रकृतिका बहुत्व सम्भव नहीं है, क्योंकि, समयबहुत्वसे ही उदीर्ण प्रकृतिके बहुत्वका व्यवहार पाया जाता है । और लोकव्यवहारके बाहिर कुछ भी नहीं है, क्योंकि, अव्यवहरणीय पदार्थके अस्तित्वका विरोध है । अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इस प्रकार है– एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बांधी गई कथंचित् उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार उदीर्ण वेदना सम्बन्धी एकवचन सूत्रके दो भंग होते हैं (२)।

कथंचित् उपशांत वेदना है ॥ ३२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थपरूवणाए कीरमाणाए जीव-पयडि-समयाणमेगवयणं जीवसमयाणं बहुवयणं च ठविय

१	१	१
२	०	२

अक्खपरावत्ते कदे उवसंतवेयणाए जीव-पयडि-समयपत्थारो होदि

१	१	२	२
१	१	१	१
१	२	१	२

। संपहि एदस्स सुत्तस्स भंगुच्चारणं कस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा । एवमेदस्स सुत्तस्स वि बे चेव भंगा (२)। एवं बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणमेयवयणपरूवणा कदा ।

सिया उदिण्णाओ वेयणाओ ।। ३३ ।।

बज्झमाणियाए वेयणाए किण्ण बहुत्तं परूविदं? ण, ववहारणयम्मि तिस्से बहुत्ता-भावादो। ण ताव जीवबहुत्तेण बज्झमाणियाए बहुत्तं, जीव भेदेण तिस्से भेदववहाराणु-

....

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति व समय; इनके एकवचन तथा जीव व समयके बहुवचनको

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	अनेक

स्थापित कर अक्षपरावर्तन करनेपर उपशांत उपशांत वेदना सम्बन्धी जीव, प्रकृति व समयका प्रस्तार होता है -

जीव	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	अनेक	एक	अनेक

।

अब इस सूत्रके भंगोंका उच्चारण करते हैं । यथा- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् उपशांत वेदना है । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गईं कथंचित् उपशांत वेदना है । इस प्रकार इस सूत्रके भी दो ही भंग हैं (२)। इस प्रकार बध्यमान, उदीर्ण और उपशांत वेदनाके एकवचनकी प्ररूपणा की गई है ।

कथंचित् उदीर्ण वेदनायें है ।। ३३ ।।

शंका - बध्यमान वेदनाके बहुत्वकी प्ररूपणा क्यों नहीं की गई है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, व्यवहारनयकी अपेक्षा उसके बहुत्वकी सम्भावना नहीं है । कारण कि जीवोंके बहुत्वसे तो बध्यमान वेदनाके बहुत्वकी सम्भावना है नहीं, क्योंकि, जीवोंके भेदसे उसके भेदका व्यवहार नहीं पाया जाता । प्रकृतिभेदसे भी उसका भेद सम्भव नहीं है, क्योंकि, एक ज्ञाना-

वलंभादो । ण पयडिभेदेण भेदो, एक्किस्से णाणावरणीयपयडीए भेदववहारादंसणादो । ण समयभेदेण भेदो, बज्झमाणियाए वट्टमाणविसयाए कालबहुत्ताभावादो । तम्हा बज्झमाणियाए वेयणाए णत्थि बहुवयणमिदि घेत्तव्वं ।

संपहि उदिण्णाए वि ण जीवबहुत्तेण बहुत्तं, तहाविहववहाराभावादो । ण पयडिबहुत्तेण उदिण्णवेयणाए बहुत्तं, णिरुद्धेयपयडित्तादो । कालबहुत्तं चेव अस्सिदूण बहुवयणसुत्त-भंगपरूवणा कीरदे । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उदिण्णाओ वेयणाओ। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उदिण्णाओ वेयणाओ । एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया उवसंताओ वेयणाओ ।। ३४ ।।

एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा- एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेसमयपबद्धा सिया उवसंताओ वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा सिया उवसंताओ । एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)। संपहि दुसंजोगपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च ।। ३५ ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव बज्झमाण-उदिण्णाणं

१	१
०	२

दुसंजोगसुत्तप-

....

प्रकृतिके भेदका व्यवहार देखा नहीं जाता । समयभेदसे भी उसका भेद नहीं हो सकता, क्योंकि, वर्तमान कालको विषय करनेवाली बध्यमान वेदनामें कालके बहुत्वकी सम्भावना ही नहीं है । इस कारण बध्यमान वेदनाके बहुवचन नहीं है, ऐसा ग्रहण करना चाहिये ।

जीवबहुत्वसे उदीर्ण वेदनाका भी बहुत्व सम्भव नहीं है, क्योंकि, वैसा व्यवहार नहीं पाया जाता। प्रकृतिबहुत्वसे भी उदीर्ण वेदनाका बहुत्व असम्भव है, क्योंकि, एक ही प्रकृतिकी विवक्षा है । अतएव एक मात्र कालबहुत्वका आश्रय करके बहुवचनसूत्रके भंगोकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गईं कथंचित् उदीर्ण वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई कथंचित् उदीर्ण वेदनायें है । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हुए (२) ।

कथंचित् उपशान्त वेदनायें हैं ।। ३४ ।।

इस सूत्रके भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बांधी गई कथंचित् उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई कथंचित् उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)। अब दोके संयोगी प्ररूपणाके लिये आगेका सूत्र कहते है-

कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है ।। ३५ ।।

इस सूत्रके अर्थका कथन करते समय पहले बध्यमान और उदीर्ण दोनोंके संयोगरूप सूत्रके

त्थारं

१	१
१	२

तेसिं जीव-पयडि-समयपत्थारे च ट्ठविय

१	२	१	१	२	२
१	१	१	१	१	१
१	२	१	२	१	१

पच्छा एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा[1] । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा । एवमेदस्स दुसंजोगपढमसुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च ।। ३६ ।।

एदस्स दुसंजोगबिदियसुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च वेयणाओ । एव-

....

प्रस्तारको

ब०	उ०
एक	एक
एक	अनेक

तथा अनेक जीव, प्रकृति व समय संबंधी प्रस्तारको भी स्थापित करके

	बध्यमान		उदीर्ण			
जीव	एक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	अनेक	एक	अनेक

पश्चात् इस सूत्रके भंगोंकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार दोके संयोग रूप इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान (एक) और उदीर्ण (अनेक) वेदनायें हैं ।। ३६ ।।

दोके संयोग रूप इस द्वितीय सूत्रके भंग प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा,

....

(१) ताप्रतौ ' च वेयणा (ए)' इति पाठः ।

मेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, सिया बज्झमाणिया च[1] उदिण्णाओ च वेयणाओ (२)। एवं दुसंजोगबिदियसुत्तस्स दो चेव भंगा ।

सिया बज्झमाणिया च उवसंता च ॥ ३७ ॥

एदस्स बज्झमाण-उवसंताणं दुसंजोगपढमसुत्तस्सत्थे भण्णमाणे ताव बज्झमाणाणं उवसंताणं दुसंजोगसुत्तपत्थारं

१	१
१	२

पुणो बज्झमाण-उवसंतजीव-पयडि-समयपत्थारं च ट्ठविय

१	२	१	१	२	२
१	१	१	१	१	१
१	१	१	२	१	२

पच्छा एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी, एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं

....

अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदनायें हैं । इस प्रकार दोके संयोग रूप द्वितीय सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान (एक) और उपशान्त (एक) वेदना है ॥ ३७ ॥

बध्यमान और उपशांत इन दोके संयोग रूप प्रथम सूत्रके अर्थका कथन करते समय पहले बध्यमान और उपशांत इन दोके संयोग रूप सूत्रके प्रस्तार

ब०	उप०
एक	एक
एक	अनेक

को तथा बध्यमान, उपशांत, जीव, प्रकृति और समय, इनके प्रस्तारको

	बध्यमान		उपशान्त			
जीव	एक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	अनेक	एक	अनेक

भी स्थापित करके पश्चात्, इस सूत्रके भंगोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् बध्यमान और उपशांत वेदना है । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा,

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'बज्झमाणियाओ', ताप्रतौ 'बज्झमाणिया (ओ)' इति पाठः ।

चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा । बे चेव भंगा[1] (२)।

सिया बज्झमाणिया च उवसंताओ च ।। ३८ ।।

संपहि एदस्स बिदियसुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ, सिया बज्झमाणिया च उवसंताओ च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ, सिया बज्झमाणिया च उवसंताओ च वेयणाओ । एवं बे भंगा (२)। एवं बज्झमाण-उवसंताणं दुसंजोगपरूवणा कदा । संपहि उदिण्ण-उवसंताणं दुसंजोगजणिदवेयणापरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि--

सिया उदिण्णा च उवसंता च ।। ३९ ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे ताव उदिण्ण-उवसंतएग-बहुवयण

१	१
२	२

जणिद-सुत्तपत्थारं

१	१	२	२
१	२	१	२

ठविय पुणो उदिण्ण[2]-उवसंताणं जीव-पयडि-समयएगवयणेहि

....

अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् बध्यमान और उपशांत वेदना है । इस प्रकार यहाँ दो ही भंग हैं (२) ।

कथंचित् बध्यमान (एक) और उपशान्त (अनेक) वेदनायें हैं ।। ३९ ।।

अब इस द्वितीय सूत्रके भंगोके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् बध्यमान और उपशांत वेदनायें है । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् बध्यमान और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार दो भंग हुए (२)। इस प्रकार बध्यमान और उपशांत इन दोके संयोगकी प्ररूपणा की गई है । अब उदीर्ण और उपशांत इन दोके संयोगसे उत्पन्न वेदनाकी प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं--

कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है ।। ३९ ।।

इस सूत्रके अर्थका कथन करते समय पहले उदीर्ण और उपशांतके एक व बहुवचनसे

उदीर्ण	उपशांत
एक	एक
अनेक	अनेक

उत्पन्न सूत्रके प्रस्तारको स्थापित

उदीर्ण	एक	एक	अनेक	अनेक
उप०	एक	अनेक	एक	अनेक

करके फिर

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'भंगो' इति पाठः । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'उदिण्णा' इति पाठः ।

जीवसमयाणं बहुवयणेहि य उप्पण्णपत्थारं च ठवेदूण

१ १ २ २	१ १ २ २
१ १ १ १	१ १ १ १
१ २ १ २	१ २ १ २

पच्छा भंगुप्पत्तिं वत्तइस्सामो । तं जहा- एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्सेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणं एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा । एवं बे भंगा (२) उदिण्णुवसंताणं दुसंजोगपढमसुत्तस्स ।

सिया उदिण्णा च उवसंताओ च ।। ४० ।।

एदस्स विदियसुत्तस्स भंगे वत्तइस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्सेव जीवस्स एया पयडी अणेसमयपबद्धा उवसंताओ, सिया उदिण्णाओ[1] च उवसंताओ च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ, सिया उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ । एवं बे भंगा (२) एदस्स सुत्तस्स ।

....

उदीर्ण व उपशांत संबंधी जीव, प्रकृति और समयके एकवचन तथा जीव व समयके बहुवचनसे उत्पन्न प्रस्तार को भी

	उदीर्ण				उपशान्त			
जीव	एक	एक	अनेक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक

स्थापित करके पश्चात् भंगोंकी उत्पत्तिको कहते हैं । यथा- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत, कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदना है । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत, कथंचित् उदीर्ण, उपशांत वेदना है । इस प्रकार उदीर्ण और उपशांत इन दोके संयोग रूप प्रथम सूत्रके दो भंग हैं (२)।

कथंचित् उदीर्ण (एक) और उपशान्त (अनेक) वेदनायें हैं ।। ३७ ।।

इस द्वितीय सूत्रके भंगोंको कहते हैं । यथा- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भङ्ग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बांधी गई उपशांत, कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार इस सूत्रके दो भङ्ग हैं (२)।

....

(१) अ-आ-काप्रतिषु 'उदिण्णाओ', ताप्रतौ 'उदिण्णा (ओ)' इति पाठः ।

सिया उदिण्णाओ च उवसंता च ।। ४१ ।।

एदस्स तदियसुत्तस्स[1] भंगे वत्तइस्सामो । तं जहा- एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया उदिण्णाओ च उवसंता[2] च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता, सिया उदिण्णाओ च उवसंता च वेयणाओ । एवं बे भंगा (२)। एदस्स सुत्तस्स ।

सिया उदिण्णाओ च उवसंताओ च ।। ४२ ।।

एदस्स चउत्थसुत्तस्स भंगे वत्तइस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा[3] उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ, सिया उदिण्णाओ, च उवसंताओ च वेयणाओ । एवं बे चेव भंगा (२)। उदिण्ण[4]-उवसंताणं दुसंजोगचउत्थसुत्तस्स । संपहि तिसंजोगजणिदवेयणा-वेयणविहाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि-

....

कथंचित् उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (एक) वेदनायें हैं ।। ४१ ।।

इस तृतीय सूत्रके भङ्गोंको कहते हैं । यथा- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत, कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भङ्ग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत, कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार इस सूत्रके दो भङ्ग हैं (२)।

कथंचित् उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (अनेक) वेदनायें हैं ।। ४२ ।।

इस चतुर्थ सूत्रके भङ्गोंको कहते हैं । यथा- एक जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशांत, कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदनायें हैं । इस प्रकार उदीर्ण और उपशांत इन दोंके संयोग रूप चतुर्थ सूत्रके दो ही भंग हैं (२)। अब तीनोंके संयोगसे उत्पन्न वेदनावेदनाके विधानकी प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं --

....

(१) ताप्रतौ 'एदस्स सुत्तस्स' इति पाठः । (२) ताप्रतौ 'उवसंता (ओ)' इति पाठः ।

(३) प्रतिषु 'समय पबद्धाओ' इति पाठः । (४) प्रतिषु 'उदिण्णा' इति पाठः ।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च ॥ ४३ ॥

एदस्स तिसंजोगपढमसुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणमेगवयणेहि उदिण्ण-उवसंताणं बहुवयणेहि

१	१	१
०	२	२

जणिदतिसंजोगसुत्तस्स पत्थारं

११११
११२२
१२१२

बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणं जीव-पयडि-समयपत्थारे च ठविय

१२	११२२	११२२
११	११११	११११
११	१२१२	१२१२

पच्छा भंगुप्पत्तिं भणिस्सामो। तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्सेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेय-

....

कथंचित् बध्यमान उदीर्ण और उपशान्त वेदना है ॥ ४३ ॥

तीनोंके संयोग रूप इस प्रथम सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त, इनके एकवचन तथा उदीर्ण और उपशान्त, इनके बहुवचन

बध्य०	उदीर्ण	उप०
एक	एक	एक
०	अनेक	अनेक

से उत्पन्न तीनोंके संयोग रूप सूत्रके प्रस्तार

बध्य०	एक	एक	एक	एक
उदीर्ण	एक	एक	अनेक	अनेक
उपशा	एक	अनेक	एक	अनेक

तथा बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त सम्बन्धी जीव प्रकृति व समयके प्रस्तारों

जीव	बध्यमान		उदीर्ण				उपशान्त			
	एक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक	एक	एक	अनेक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक

को भी स्थापित करके पश्चात् भंगोंकी उत्पत्तिको कहते हैं। यथा-एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है।

णाओ । एयमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया[1] पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणाओ । एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च ।। ४४ ।।

एदस्स तिसंजोगबिदियसुत्तस्स अत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा[2] उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ । एदमेदस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंता च ।। ४५ ।।

एदस्स तदियसुत्तस्स आलावे भणिस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया

....

इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा अनेक जीवोंकी एक एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशान्त, कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान (एक), उदीर्ण (एक) और उपशान्त (अनेक) वेदनायें हैं ।। ४४ ।।

तीनोंके संयोग रूप इस द्वितीय सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है-एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भंग हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान (एक), उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (एक) वेदना है ।। ४५ ।।

इस तृतीय सूत्रके आलापोंको कहते हैं । वे इस प्रकार हैं-एक जीवकी एक प्रकृति एक

....

(१) ताप्रतौ 'अणेयाणं (पयडीणं) जीवाणमेय' इति पाठः ।

(२) प्रतिषु '-पबध्दाओ' इति पाठः ।

पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंता च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी[1] अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंता च वेयणाओ । एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंताओ च ।। ४६ ।।

एवमेदस्स चउत्थसुत्तस्स भंगपरूवणं कस्सामो । तं जहा–एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी अणेयसमयपबद्धा[2] उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उदिण्णाओ, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धा उवसंताओ; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाओ च उवसंताओ च वेयणाओ । एवं

....

समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भङ्ग हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान (एक), उदीर्ण (अनेक) और उपशान्त (अनेक) वेदनायें हैं ।। ४६ ।।

इस प्रकार इस चतुर्थ सूत्रके भङ्गोंकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है–एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं । इस प्रकार एक भङ्ग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्ही जीवोंकी एक प्रकृति अनेक समयोंमें बाँधी गई उपशान्त, कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदनायें हैं ।

....

(१) ताप्रतावतोऽग्रे 'एयसमयपबद्धा उदिण्णा तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी अणेयसमयपबद्धाओ उवसंताओ सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंताओ च वेयणाओ, एवमेदस्स बे चेव भंगा २ । (१)' इति पाठः ।

(२) प्रतिषु '–पबद्धाओ' इति पाठः ।

तिसंजोगचउत्थसुत्तस्स बे चेव भंगा (२)। एवं बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणं एग-दु-(-ति) संजोगेहि ववहारणयमस्सिदूण णाणावरणीयवेयणावेयणविहाणं परूविदं ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ।। ४७ ।।

जहा णाणावरणीयस्स ववहारणयमस्सिदूण वेयणावेयणविहाणं परूविदं तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं; विसेसाभावादो ।

संगहणयस्स णाणावरणीयवेयणा सिया बज्झमाणिया वेयणा ।।४८।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणं जीवबहुवयणं च दुविय

१	१	१
२	०	०

पुणो एत्थ अक्खपरावत्तं[1] करिय जणिदपत्थारं च ठवेदूण

१	२
१	१
१	१

अत्थ-परूवणं कस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया बज्झ-

....

इस प्रकार तीनोंके संयोग रूप चतुर्थ सूत्रके दो ही भङ्ग हैं (२)। इस प्रकार व्यवहार नयका आश्रय करके बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त, इनके एक, दो (और तीनोंके) संयोगसे ज्ञानावरणीयकी वेदनाके विधानकी प्ररूपणा की गई है ।

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके वेदनाविधानकी प्ररूपणा करनी चाहिये ।। ४७ ।।

जिस प्रकार व्यवहारनयका आश्रय करके ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदनाके विधानकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंकी वेदनाके विधानकी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

संग्रह नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीयकी वेदना कथंचित् बध्यमान वेदना है ।। ४८ ।।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति और समय इनके एकवचन तथा जीवके बहुवचन

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	०

को स्थापित करके फिर यहाँ अक्षपरावर्तन करके उत्पन्न हुए प्रस्तार

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

को स्थापित करके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है-

एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् बध्यमान वेदना है । इस प्रकार एक भङ्ग

....

(१) ताप्रतौ 'परावत्तिं' इति पाठः ।

माणिया वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया बज्झमाणिया वेयणा । एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया उदिण्णा वेयणा ।। ४९ ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणेहि जीवबहुवयणेण च

१	१	१
२	०	०

उप्पाइदपत्थारो ठवेदव्वो

१	२
१	१
१	१

[१] । एसो संगहणओ तिण्णि वि काले काल-सामण्णेण संगहिदूण गेण्हदि त्ति कालस्स बहुवयणं णेच्छदि । जीवेसु वि जीवसामण्णेण संगहिदेसु[२] बहुत्तं णत्थि त्ति जीवबहुवयणं किण्णावणिज्जदे? ण[३], संगहणयस्स सुद्धस्स विसए अप्पिदे जीवबहुत्ताभावो होदि चेव, किंतु असुद्धसंगहणओ अप्पिदो त्ति कट्टु ण जीवाणहुत्तं विरुज्झदे । संपहि एवं ठविय एदस्स अत्थपरूवणं कस्सामो । तं जहा-

....

हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् बध्यमान वेदना है । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भङ्ग हैं (२)।

कथंचित् उदीर्ण वेदना है ।। ४९ ।।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति और समय, इनके एकवचन और जीवके बहुवचन

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	०

से उत्पन्न कराये गये प्रस्तारको स्थापित करना चाहिये-

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

चूँकि यह संग्रह नय तीनों ही कालोंको काल सामान्यसे संगृहीत करके ग्रहण करता है, अतएव वह कालके बहुवचनको स्वीकार नहीं करता ।

शंका - जीव सामान्यसे जीवोंके भी संगृहीत होनेपर चूँकि उनका भी बहुवचन सम्भव नहीं है, अतएव जीवोंके बहुवचनको कम क्यों नहीं किया जाता है ?

समाधान - नहीं, क्योंकि, यद्यपि शुद्ध संग्रहनयके विषयकी प्रधानता होनेपर जीवबहुत्वका अभाव होता ही है, किन्तु यहाँ चूँकि अशुद्ध संग्रहनय प्रधान हे, अत: जीवबहुत्व विरुद्ध नहीं है

....

(१) प्रतिषु

१	२
१	२
१	२

एवंविधोऽत्र प्रस्तारो लभ्यते । (२) अ-आ-काप्रतिषु 'संगहिदेस' इति पाठ: ।

(३) ताप्रतौ 'ण' इत्येतस्य स्थाने 'एवं' इत्येतत्पदमुपलभ्यते ।

एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उदिण्णा वेयणा । एवं बे भंगा (२)। उदिण्णेगवयणसुत्तस्स ।

सिया उवसंता वेयणा ।। ५० ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भणमाणे जीव-पयडि-समयाणमेगवयणेहि जीवबहुवयणेण च

१	१	१
२	०	०

जणिदपत्थारं

१	२
१	१
१	१

ठविय एदस्स सुत्तस्स भंगपमाणपरूवणं कस्सामो । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा सिया उवसंता वेयणा । एवमेदस्स सुत्तस्स बे चेव भंगा (२)।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च ।। ५१ ।।

एदस्स दुसंजोगपढमसुत्तस्स अत्थे भणमाणे बज्झमाण-उदिण्णाणं दुसंजोग-

....

अब इस प्रकारसे (प्रस्तारको) स्थापित करके इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है-एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार एक भङ्ग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार उदीर्ण वेदना सम्बन्धी एकवचन सूत्रके दो भङ्ग हैं (२)।

कथंचित् उपशान्त वेदना है ।। ५० ।।

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय जीव, प्रकृति व समय, इनके एकवचन तथा जीवके बहुवचन

जीव	प्रकृति	समय
एक	एक	एक
अनेक	०	०

से उत्पन्न हुए प्रस्तार

जीव	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक
समय	एक	एक

को स्थापित करके इस सूत्रके भङ्गोंके प्रमाणकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है-एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् उपशान्त वेदना है। इस प्रकार एक भङ्ग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई कथंचित् उपशान्त वेदना है। इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भङ्ग हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है ।। ५१ ।।

दोके संयोगरूप इस प्रथम सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय बध्यमान व उदीर्ण इन दोके

पत्थारं

१
१

[१] तेसिं चेव जीव-पयडि-समयपत्थारं च ठविय

१२	१२
११	११
११	११

पच्छा परूवणा कीरदे । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा। एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च वेयणा। एवमेदस्स सुत्तस्स दो चेव भंगा होंति (२)।

सिया बज्झमाणिया च उवसंता च ॥ ५२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थे भण्णमाणे बज्झमाण-उवसंताणं दुसंजोगपत्थारं

१
१

तेसिं

....

संयोगसे उत्पन्न प्रस्तार

बध्य०	एक
उदीर्ण	एक

को तथा उनसे ही सम्बन्ध रखनेवाले जीव, प्रकृति और समय, इनके प्रस्तार

	बध्यमान		उदीर्ण	
जीव	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक

को भी स्थापित करके पश्चात् यह प्ररूपणा की जाती है । यथा-एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार एक भङ्ग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण; कथंचित् बध्यमान और उदीर्ण वेदना है । इस प्रकार इस सूत्रके दो ही भङ्ग होते हैं (२)।

कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है ॥ ५२ ॥

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय बध्यमान और उपशान्त इस दोके संयोगरूप प्रस्तार

बध्य०	१
उदीर्ण	१

को तथा उन्हींसे सम्बन्ध रखनेवाले जीव, प्रकृति व समय इनके प्रस्तारको भी स्थापित

....

(१) आ-काप्रत्योः ,

१
२

, ताप्रतौ

२
१

एवंविधोऽत्र प्रस्तारः ।

चेव (जीव-) पयडि-समयपत्थारं च ठविय

१ २	१ २
१ १	१ १
१ १	१ १

पच्छा सुत्तालावो वुच्चदे । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा । एवमेगा उच्चारणा (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उवसंता च वेयणा । एवमेदस्स सुत्तस्स दो चेव उच्चारणाओ (२)।

सिया उदिण्णा च उवसंता च ॥ ५३ ॥

एत्थ वि पुव्वं व उदिण्णुवसंतदुसंजोगपत्थारं

१
१

तेसिं चेव जीव-पयडि-समय-पत्थारं च ठविय

१ २	१ २
१ १	१ १
१ १	१ १

अत्थो वुच्चदे । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी

....

	बध्यमान		उपशांत	
जीव	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक

करके पश्चात् सूत्रके आलापको कहते हैं । वह इस प्रकार है-एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है । इस प्रकार एक उच्चारणा हुई (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशान्त; कथंचित् बध्यमान और उपशान्त वेदना है । इस प्रकार सूत्रकी दो ही उच्चारणायें हैं (२)।

कथंचित् उदीर्ण और उपशान्त वेदना है ॥ ५३ ॥

यहाँ भी पहलेके समान उदीर्ण और उपशान्त, इन दोके संयोगरूप प्रस्तार

उ०	१
उप०	१

को तथा उन्हींसे सम्बन्ध रखनेवाले जीव, प्रकृति और समय, इनके प्रस्तार

	उदीर्ण		उपशांत	
जीव	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक

को

एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा । एवमेया उच्चारणा (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया उदिण्णा च उवसंता च वेयणा । एवमेत्थ बे चेव उच्चारणाओ (२) । संपहि तिसंजोगजणिद-वेयणाविहाणपरूवणट्ठमुत्तरसुत्तं भणदि ।

सिया बज्झमाणिया च उदिण्णाच उवसंता च ॥ ५४ ॥

एदस्स अत्थे भण्णमाणे तिसंजोगसुत्तपत्थारं

१
१
१

तेसिं चेव (जीव-) पयडि-समयपत्थारे च ठविय

१ २	१ २	१ २
१ १	१ १	१ १
१ १	१ १	१ १

अत्थो वुच्चदे । तं जहा-एयस्स जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तस्स चेव जीवस्स एया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झ-

....

भी स्थापित करके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदना है । इस प्रकार एक उच्चारणा हुई (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् उदीर्ण और उपशांत वेदना है। इस प्रकार यहाँ दो ही उच्चारणायें हैं (२)। अब तीनोंके संयोगसे उत्पन्न वेदनाके विधानकी प्ररूपणा करनेके लिये आगेका सूत्र कहते हैं ।

कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशान्त वेदना है ॥ ५४ ॥

इस सूत्रके अर्थकी प्ररूपणा करते समय तीनोंके संयोग रूप सूत्रके प्रस्तार

ब०	१
उ०	१
उप०	१

को तथा उन्हींसे संबद्ध (जीव,) प्रकृति और समयके प्रस्तार

जीव	बध्यमान		उदीर्ण		उपशांत	
	एक	अनेक	एक	अनेक	एक	अनेक
प्रकृति	एक	एक	एक	एक	एक	एक
समय	एक	एक	एक	एक	एक	एक

को भी स्थापित करके अर्थकी प्ररूपणा करते हैं । वह इस प्रकार है- एक जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उसी जीवकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशांत वेदना है।

माणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणा । एवमेगो भंगो (१)। अधवा, अणेयाणं जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा बज्झमाणिया, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उदिण्णा, तेसिं चेव जीवाणमेया पयडी एयसमयपबद्धा उवसंता; सिया बज्झमाणिया च उदिण्णा च उवसंता च वेयणा । एवं बज्झमाण-उदिण्ण-उवसंताणं तिसंजोगम्मि दो चेव भंगा (२)।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ॥ ५५ ॥

जहा संगहणयमस्सिदूण णाणावरणीयवेयणावेयणाविहाणं परूविदं तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं, विसेसाभावादो ।

उजुसुदस्स णाणावरणीयवेयणा उदिण्ण[1] फलपत्तविवागा वेयणा ॥५६॥

उदीर्णस्य फलं उदीर्णफलम्, तत्प्राप्तौ विपाको यस्यां सा उदीर्णफलप्राप्तविपाका वेदना भवति, नापरा[2] । जो कम्मक्खंधो जम्हि समए अण्णाणमुप्पाएदि सो तम्हि चेव समए णाणावरणीयवेयणा होदि, ण उत्तरखणे; विणट्ठकम्मपज्जायत्तादो । ण पुव्वक्खणे वि, तस्स अण्णाणजणणसत्तीए अभावादो । ण च वेयणाए अकारणं वेयणा होदि, अव्ववत्थापसंगादो। तम्हा बज्झमाण-उवसंतकम्माणि वेयणा ण होंति, उदिण्णं चेव वेयणा होदि त्ति भणिदं होदि ।

....

इस प्रकार एक भंग हुआ (१)। अथवा, अनेक जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई बध्यमान, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उदीर्ण, उन्हीं जीवोंकी एक प्रकृति एक समयमें बाँधी गई उपशांत; कथंचित् बध्यमान, उदीर्ण और उपशांत वेदना है । इस प्रकार बध्यमान, उदीर्ण और उपशांत इन तीनोंके संयोगमें दो ही भंग होते हैं (२)।

इस प्रकार शेष सात कर्मोंके सम्बन्धमें कथन करना चाहिये ॥ ५५ ॥

जिस प्रकार संग्रह नयका आश्रय करके ज्ञानावरणीय कर्मके वेदनावेदनाविधानकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके वेदनावेदनाविधानकी भी प्ररूपणा करनी चाहिये, क्योंकि, उसमें कोई विशेषता नहीं है ।

ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय कर्मकी वेदना उदीर्ण फलको प्राप्तविपाकवाली वेदना है ॥ ५६ ॥

उदीर्णका फल उदीर्णफल, उसको प्राप्त है विपाक जिसमें वह उदीर्णफलविपाक वेदना है, इतर नहीं है । अर्थात् जो कर्मस्कन्ध जिस समयमें अज्ञानको उत्पन्न कराता है उसी समयमें ही वह ज्ञानावरणीयकी वेदनारूप होता है, न कि उत्तर क्षणमें, क्योंकि, उत्तर क्षणमें उसकी कर्मरूप पर्याय नष्ट हो जाती है । पूर्व क्षणमें भी उक्त कर्मस्कंध ज्ञानावरणीय की वेदनारूप नहीं होता, क्योंकि, उस समय उसमें अज्ञानको उत्पन्न करनेकी शक्तिका अभाव है । और जो वेदनाका कारण ही नहीं है वह वेदना नहीं होता है, क्योंकि, वैसा होनेपर अव्यवस्थाका प्रसंग आता है । इस कारण बध्यमान व उपशांत कर्म वेदना नहीं होते हैं, किंतु उदीर्ण कर्म ही वेदना होता है; यह सूत्रका अभिप्राय है ।

....

(१) प्रतिषु 'उदिण्णा-' इति पाठः । (२) ताप्रतौ '-प्राप्तविपाकवेदना परा' इति पाठः ।

एवं सत्तण्णं कम्माणं ।। ५७ ।।

जहा णाणावरणीयस्स परूविदं तहा सेससत्तण्णं कम्माणं परूवेदव्वं ।

सद्दणयस्स अवत्तव्वं ।। ५८ ।।

कुदो ? तस्स विसए दव्वाभावादो । णाणावरणीय-वेयणासद्दाणं भिण्णत्थाणं भिण्णसरूवाणं समासाभावादो वा पुधभूदेसु अपुधभूदेसु च तस्सेदमिदि संबंधाभावादो वा तिण्णं सद्दणयाणमवत्तव्वं ।

एवं वेयणावेयणाविहाणे त्ति समत्तमणुयोगद्दारं ।

....

इसी प्रकार शेष सात कर्मोंके सम्बन्धमें कहना चाहिये ।। ५७ ।।

जिस प्रकार ऋजुसूत्र नयकी अपेक्षासे ज्ञानावरणीयके सम्बन्धमें प्ररूपणा की गई है उसी प्रकार शेष सात कर्मोंके सम्बन्धमें भी प्ररूपणा करनी चाहिये ।

शब्द नयकी अपेक्षा ज्ञानावरणीय वेदना अवक्तव्य है ।। ५८ ।।

इसका कारण यह है कि शब्द नयके विषयमें द्रव्यका अभाव है । अथवा, ज्ञानावरणीय और वेदना इन भिन्न अर्थ व स्वरूपवाले दोनों शब्दोंका समास न हो सकनेसे, अथवा पृथग्भूत और अपृथग्भूत उनमें 'यह उसका है' इस प्रकारका सम्बन्ध न बन सकनेसे भी तीनों शब्द नयोंकी अपेक्षासे वह अवक्तव्य है ।

इस प्रकार वेदनावेदनाविधान यह अनुयोगद्वार समाप्त हुआ ।

● ● ●